जय बाबा स्वामी

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ Whole World is a Family ॥

ॐ

13-2-2014
गुरुवार

सदगुरु वाणी (5)

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार ---

यह गहन ध्यान अनुष्ठान तो एक ऐसा "पवित्र पर्व" होता है। जब मैं देहभाव से संपुर्णतह "मुक्त" होता हुं। और यही कारण है। प्रत्येक साधक से "सम्पर्क" मे रहता हुं। और सुक्ष्मरुप से साधक की प्रगती का "अवलोकन" करता हुं। और जैसा ही यह सम्पर्क होता है, आप के शरीर से "चैतन्य" बहने लग जाता है, और आप एक ध्यान की अच्छी स्थीती मे चले जाते है, यह स्थिती ठिक वैसी ही होती है। जैसे कीसी छुट्टी के समय एक माँ अपने बच्चो को निहारती है। अपने बच्चो को प्रेम देती है, दुलार, करती है, क्योकी बाकी समय तो माँ और बच्चे भी व्यस्त ही रहते है। अब बच्चो की संख्या लाखो मे होने के कारण प्रत्येक को उसकी स्थिती बताना संभव न होगा।

|| जय बाबा स्वामी ||

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

लेकीन इस संन्देश को आप "शांन्ती" के साथ पढ़े और आप
स्वंयम किस "स्थान" तक प्रगती कर चुके है। यह जाने
क्योकी हम कहाँ तक पहुचे है। और आगे कहाँ तक जाना है।
यह जानना आपको आवश्यक है।
इस समय ध्यान करने वाले साधको की संख्या सर्वाधीक
है। क्योकी इस वर्ष इस संख्या मे बडी मात्रा मे नये "युवा
साधक" जुड़ गये है। इसी लीये ध्यान की अवस्थाऐ अब
विस्तार से बताता हु।
(1) उद्देश —
हम अगर "शरीरभाव" को प्रधानता देते है। तो शरीर का भाव
बढ़ जाता है। अत्याधीक शरीर भाव बढ़ जाने के कारण भी
हमारे जिवन मे "समस्याये" खडी हो जाती है। और कई
बार तो समस्याऐ ही हमारे को "आध्यात्मीक मार्ग" मे आने
के लिये प्रेरीत करती है। लेकीन यह जान ले हमारे भितर
ही समस्या है इस लीये हमारे बाहर समस्या है। ध्यान से
प्राप्त ऊर्जा का उपयोग अगर हमने बाहरी समस्या को दुर
करने के लिये कीया तो समस्या तो दुर हो जायेगी
लेकीन कल दुसरी खडी हो जायेगी। इसलीये सदैव
ध्यान से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग "भितर की" समस्या को
दुर करने के लिये करो, याने कर्म करना है। कोई भी
बाहरी समस्या को दुर करने की "प्रार्थना" नही करना
है। क्योकी आपकी की गयी प्रार्थना आपको प्राप्त

उर्जा को "दिशा" देती है। अगर आपने कोई प्रार्थना नही की कोई "अपेक्षा" नही की और ध्यान कीया तो क्या होगा ध्यान से प्राप्त "उर्जा" आपके भितर की समस्या को पहले दुर करेगी क्योकी समस्या की "जड" कहाँ है, यह परमात्मा को मालुम है, आपको नही इसी लीये किसी "उद्देश" से ध्यान न करे ध्यान करना आपको "अच्छा" लगता है, ध्यान करने से "आंनद" होता है, केवल इसी के लिये ध्यान करे। ध्यान करने से "शांन्ती" मिलती है। इसके लिये ध्यान करे। क्योकी "शरीरभाव" ही "प्रथम रुकावट" है, जो अपने शरीर की समस्याओ की ओर ही आपका ध्यान "आर्कशीत" करेगी क्योकी आप अगर ध्यान करेगे तो आत्मा का भाव बढेगा और शरिरभाव कम होगा इसी लीये आपका ध्यान समस्याओ की ओर करके शरीर भाव आपके मार्ग मे बाधा खडी करता है। इस लीये प्रथम तो इससे सावधान हो रहे ध्यान कभी भी "अपेक्षा" के साथ नही करना चाहीये क्योकी अपेक्षा तो शरीर का ही भाव होता है। "निस्वार्थभाव" से ही ध्यान करे "निस्वार्थ भाव" आत्मा का भाव होता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

(२) स्थान का महत्व —

आप कीस स्थान पर ध्यान करते है इसका बड़ा महत्व होता है, क्योकी उस स्थान का "आभामंडल" कैसा है, इसका भी ध्यान पर प्रभाव पडता है। सतत नियमीत रूप से एक ही स्थान पर ध्यान करे तो उस स्थान का वातावरण ही बादल जाता है, यह स्थान "पुर्व पश्चीम" होना अच्छा रहता है। आप सुक्ष्मशरीर की फोटो पश्चीम दिशा की ओर मुंह करके रखे तो आप जब उसके सामने बैठेगे तो आप का मुंह पुर्व दिशा की ओर होगा फोटो कीसी टेबल या कुर्सी पर स्थापीत करे (टांगे नही) वह फोटो इतना उंचा रखे की फोटो आपके "आज्ञाचक्र" से उपर हो फोटो को गुलाब जल, से नियमीत पोछे चंदन लगाये, हार फुल, चढाये फोटो के सामने गायके घी, का या तील के तेल, का दिया जलाये या (मोमबत्ती) भी जला सकते है। ध्यान करने के स्थान पर रोज झाडू पोछा करके उस स्थान को स्वच्छ रखे पास कपुर भी वातावरण की शुद्धी के लीये लगा सकते है। अगरबत्ती भी लगा सकते है। ये सब बाते स्थान पर एक वातावरण की निर्मीती करती है। यह स्थान एकान्त मे हो इस स्थान का प्रदर्शन न हो।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

(3) शरीर का महत्व —

आध्यात्मीक प्रगती मे देह, साधक भी है, और बाधक भी है, पहले बाधक है, लेकीन बाद मे साधक सिध्द होगा तो प्रथम ध्यान करने के पुर्व शरीर को नहाधोकर पवीत्र एव शुद्ध करना चाहिये और फीर सुती और ढिले वस्त्र पहनकर ध्यान करने के लिये एक निश्चीत कीये स्थान पर निश्चीत समय पर निश्चीत समय के लीये बैठना चाहिये ध्यान के लिये विशेष "वस्त्र" भी रखेतो अधीक अच्छा होगा ये वस्त्र रोज के रोज धोना चाहिये। आपका ध्यान लगे या न लगे आपको इस निश्चीत स्थान पर निश्चीत समय पर निश्चीत समयतक बैठना ही चाहीये करीब (30 मीनीट) बैठे।

प्रथम तो आपका शरीर ही विरोध करेगा। आपको आलस आयेगा, और ध्यान को बैठोगे तो शरीर मे खुजली होना प्रारंभ हो जायेगी आपके भितर की अशांन्ती खुजली के रूप मे बाहर निकलेगी आपको उबासी आयेगी आपको खांसी आयेगी आपके हाथ पैर या कान फडफडायेगे, आपको डकारे आयेगी आपके निचे से भी गैस बाहर निकलना प्रारंभ होगी यह सब शरीर के विरोध के ही लक्षण होते है। आपको इन बातो की ओर ध्यान नही देना है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

यह सब शरीर का विरोध इस लीये होता है, की ध्यान करने से शरीर का प्रभुत्व कम होता है, और शरीर अपना प्रभुत्व कम करना नही चाहता है,
इस समस्या को दुर करने के लीये आपको अपने आत्मभाव को ही बढाना होगा। आत्मभाव को बढाना याने आपको इस समय "मैं एक पवीत्र आत्मा हुं मैं एक शुद्ध आत्मा हुं," इस मंत्र का जाप करते रहना है, माला फेरते बैठे तो भी चलेगा ऐसा करने से आपका शरीर का भाव कम होगा और आत्मा का भाव बढेगा यह मंत्र जाप धिरे² आपके शरीर के विरोध को कम करेगा, आप जितने शरीर भाव के अधीन होगे उतना ही अधीक समय इस स्थान पर आपको लगेगा। एक स्थान पर घर के सदस्य ध्यान कर सकते हैं, लेकीन अपने "आसन" अलग² रखना चाहीये अपना अपना आसन स्थान पर बीछाकर ही ध्यान करे। आपके ध्यान के बाद उसे उठाकर रख दें। इस मंत्र के साथ आप स्वंयम एक आत्मा हैं। यह मानेगे उतना ही आप का आत्मा का भाव बढेगा। और जितना आत्मा का भाव बढेगा उतना ही शरीर का भाव कम होगा।

आप के उपर शरीर का प्रभुत्व होता है। और यह प्रभुत्व शरीर खोना नही चाहता है, और इसी कारण जब आप ध्यान करते है। तो वह शरीर वीरोध करता है, तब तो आप की स्थीती उस घुड़सवार जैसि होती है। जो एक अडीयल घोड़े पर सवारी करने प्रथमबार ही बैठा हो लेकीन घुड़सवार की पकड़ जैसे² अच्छी होने लगती है, वैसे² घोड़ा नियत्रंण मे आ जाता है। एक निश्चीत स्थान और एक निश्चीत समय पर नियमीत रूप से ध्यान करने का "संकल्प" करे तो ही हम अपने शरीर पर नियत्रंण कर सकते है, यह सब अभ्यास होता है, जो धिरे² ही होता है।

(4) मन —

आपने नियमीत ध्यान करके अपने शरीर को एक निश्चीत स्थान पर, एक निश्चीत समय पर बैठने की आदत भी डाली तो भी आपके मन पर आपका कोई नियत्रंण नही होता है। मन चंचल, होता है, आप शरीर से भले ही एक स्थान पर बैठे रहे मन इतने समय मे भी दुनीयाभर मे जाकर आ जायेगा। यह समस्या प्रांरभ मे प्रत्येक साधक को आती ही है, लेकीन कुछ दिन ध्यान करने के बाद यह समस्या कम

जब यह समस्या कम होने लगती है। तब मन अपना आखरी हमला करता है, वह आपको समझाता है, यह ध्यान करना तेरे बस का नही है, यह ध्यान तेरे से होने वाला नही है, ध्यान तो ऋषी मुनी ही कर सकते है, तु तो एक संसारी मनुष्य है, क्यो रोज अपना समय बर्बाद कर रहा है। इसी समय को किसी ओर कार्य मे लगा तेरे पास कीतना कार्य पडा है। उस कार्य को कर इस ध्यान मे समय को बर्बाद मत कर। और जो आपके कार्य बाकी है, वह भी वह याद करायेगा। कुछ साधको का ध्यान इस स्थान तक आकर ही छुट जाता है। मन बडा चंचल भी है और चतुर भी है, और अगर आप उसकी बातो मे आ गये तो आप का ध्यान छुट जायेगा। आप उसकी बाते सुनो लेकीन कुछ दिन उसकी ओर ध्यान ही मत दो आप मान लो यह विरोधी है, आपका उसी लीये विरोध कर रहा है, इसी लीये कहाँ गया है। ध्यान की साधना "सदगुरु" के सानीध्य मे होनी चाहिये, "सदगुरु" के प्रती हमारी श्रद्धा और विश्वास ऐसे समय हमारी सहायता करता है, और हम स्थिती ऐसी मे से भी नीकल जाते है,

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

(5) भुतकाल —

मन पर नियजंत्र करके हम जैसे ही ध्यान मे आगे की ओर प्रगती करते है, हमारे जिवन का भुतकाल तो सिनेमा जैसा ही सारा दिखने लग जाता है, बचपन से लेकर अभी तक जो भी जिवन मे घटा होगा। सब एकदम से याद आने लग जाता है, जो घटनाऐ हम भुल भी गये थे वे भी फीर से याद आने लगती है, और इतनी छोटी² बाते भी याद आने लगती है। जो आज तक कभी भी याद भी नही आयी थी और आप ऐसा सोचने लग जाते है। ऐसा अब मेरे साथ क्यो हो रहा है, आपके जिवन की सारी बुरी घटनाऐ सारे बुरे व्यकती याद आने लगते है जिनसे अब कोई संबन्ध भी नही है और आप भी परेशान हो जाते है।

वास्तव मे यह चंद्रनाडी की शुद्धीकरण की प्रक्रिया है, यह ठिक वैसा ही है, जैसे कीसी पुराने कुँए की सफाई करेगे तो सालोतक उस कुँए मे जो भी डाला गया है, वह सब तो सफाई के समय निकलेगा ही लेकीन वह एक बार ही दिखेगा क्योंकी आप बाद मे उसे निकाल कर फैंक ही देगे, यह भी जो होता है, वह ऐसा ही है। हमे यहाँ घबराना नही चाहिये अपनी ध्यान साधना करते रहना है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

(6) भविष्यकाल —

यह प्रकृती का नियम ही है। की हम अती मे किसी ओर गये तो बाद मे हमे स्वाभावीक रुप से दुसरी ओर जाना ही पडता है। ऐसा अब हम खुब भुतकाल के विचार करते है। तो फलस्वरुप हमारा चित्त भविष्यकाल मे भी चला जाता है। और या तो हम बडी^{2} योजनाऐ बनाने लग जाते है, या भविष्य की चिन्ता हमे सताने लग जाती है।

फेर साधक की स्थिती घडी के पेंडुलम जैसी, कुछ दिनो तक रहती है, याने कभी भुतकाल के विचार तो कभी भविष्यकाल के विचार हम करते है, ये सभी स्थितीयाँ हमारे साधना के ही पडाव मात्र होते है, धिरे^{2} इन विचारो की तिव्रता कम होने लग जाती है, और तिव्रता कम होते होते समाप्त भी हो जाती है, साधक का अपने सदगुरु के प्रती विश्वास और श्रद्धा के अनुसार ही यह समय अवधी होती है, इस अवधी का कोई भी निश्चीत मापदंड नही होता है, यह स्थिती मे पहुचने के बाद हमारी ध्यान की बैठक तैयार होने लग जाती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(7) पुर्वजन्म के कर्म -

जब इस जन्म का सब ठीक होने लगता है, तो जो पुर्व जन्म के कीये गये पापकर्म बाकी होते है, वह सब ध्यान मार्ग मे बाधा खडी करते है, क्योंकी उन्हे भी भोगना पडता ही है, उन्हे भोग कर ही समाप्त करना होता है। हाँ अगर आप का आपके सदगुरु के प्रती संपुर्ण "विश्वास" और "श्रद्धा" है, तो इन कर्मो को भोगते समय उनकी तिव्रता महसुस नही होती है,

इस प्रकार हम कह सकते है, की साधक का पुर्वार्ध अच्छा न होसके लेकिन साधक के जिवन का उत्तरार्ध सदैव अच्छा ही होता है, यह पापकर्म इसलीये भोगना होते है, क्योंकी साधक धिरे२ उस मुक्त अवस्था की ओर जा रहा है, जिसे 'मोक्ष' कहते है, ध्यान की साधना का यह पडाव साधक का सदगुरु के प्रती विश्वास और श्रद्धा का कडा परिक्षणसा ही होता है, या यो मानो यह आखरी पडाव ही है, क्योंकी इस आखरी पडाव पे साधक का मै का "अंहकार" अंश, तह समाप्त हो जाता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

(8) सद्‌गुरु दर्शन –

परमात्मा निराकार शकती के रूप मे इस विश्व मे एक चेतनाशकती के स्वरूप बहते रहता है, वह इस सारे संसार के अणुरेणु मे ही व्याप्त होता है। मनुष्य प्राणी अतीसंवेदनशील नही है, इसी लीये इस परमात्मा का अेहसास उसे नही होता है, जीस स्थान पर परमात्मा की शकती सामुहीकता मे होती है, वही मनुष्य इस शकती का रोहसास कर पाता है, कोई शरीरधारी मनुष्य अपने आप को इतना शुद्ध कर ले इतना पवीत्र कर ले इतना खाली कर ले तो यह विश्वचेतना उस मनुष्य के भितर से भी बहने लग जाती है, और वह शरीरधारी का शरीर "परमात्मामय" हो जाता है, और जो भी इस शरीरधारी को देखता है, वह उसे "परमात्मा सा" लगने लग जाता है, क्योंकी परमात्मा की शकती और शरीरधारी का शरीर अलग लगता ही नही है, इसीलीये लोग माध्यम को ही परमात्मा समझने लग जाते है, जबकी सत्य यह है, की परमात्मा का आकार न कभी हुआ है, और न कभी भवीष्य मे होगा।

॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

लेकिन आकार से ही निराकार तक पहुचना होता है, यह ठिक ऐसा ही है, जैसा ऊंची उडी पंतग को उतारने के लिये धागे को ही खेचंना पडता है, तो पंतग बाद मे हाथ आ जाती है

इसी प्रकार से जब आप सद्‌गुरु के माध्यम से परमात्मा तक पहुचते है, तो आप को साक्षात सद्‌गुरु के ही दर्शन होते है यह स्थिती आपके आज्ञाचक्र तक पहुचने की पहचान होती है। कई साधक इसी स्थान पर आकर अटक जाते है, वास्तव मे यह समर्पण ध्यान का एक पडाव ही है, वास्तव मे परमात्मा का कोई आकार ही नही है।

(9) अनुभुतीया —

आप आगे की ओर यात्रा करते है, तो बाद मे दिखने की प्रक्रीया बंद हो जाती है, और अनुभुती की प्रक्रीया प्रारंभ होती है, कभी चंदन के इत्र की खुशबु आती है। तो कभी गुलाब के इत्र की खुशबु आती है, और ऐसे समय जब साधक उस खुशबु को बाहर खोजने लगता है। तो वह चली जाती है कभी शंखनाद सुनायी पडता है। तो कभी घंटानाद सुनायी पडता है, तो कभी बांसरी का नाद सुनायी पडता है, इस प्रकार की अनुभुतीया होने लगती है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari, Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

हमे इन अनुभुतीयो पर अधीक ध्यान नही देना है, बाद मे आपको आपके भितर से ही ब्रम्हनाद सुनायी पडने लगेगा और तब आपके आसपास भी आपका स्वंयम का एक "आभामंडल" तैयार हो जायेगा।
और आगे बढेगे तो आपको सतत यह एहसास होगा की आपके सानीध्य मे आप के सदगुरु होते ही है, यह स्थिती प्राप्त होने पर आपके शरीर पर आपकी आत्मा का नियंत्रण होना प्रारंभ हो जायेगा। और फीर आप स्वंयम अपने ही आंनद मे और अपनी ही मस्ती मे मस्त रहोगे आपके आसपास आपका ही एक विश्व निर्माण हो जायेगा और फीर आप उस मुक्त अवस्था को प्राप्त करेगे जिस अवस्था को "मोक्ष" कहते है, लेकीन इस मुक्त अवस्था तक पहुचने के लिये आपको सतत बारा साल नीयमीत ध्यान साधना की आवश्यकता होती है, इस प्रकार से क्रमबद्ध तरीके से धिरे २ प्रगती करके साधक इस अवस्था तक स्वप्रयत्न से पहुच सकता है, अगर आपके पास समय और उम्र है, तो ही इस मार्ग का अवलंबन करे, क्योकी "समयरुपी" धन तो इस मार्ग मे लगेगा ही, यह "नौमंझील" तक पहुचने का सिढीयो का मार्ग होता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

यही मार्ग "पुराने जमाने" के लोगो को मालुम है। क्योकी पुराने जमाने मे लीफ्ट नही होती थी। अब दुसरा मार्ग जो नया है आज के जमाने का है, वह लीफ्टवाला मार्ग है। हम जिस प्रकार अपने आप को लिफ्ट मे खडा कर "लिफ्टमैन" को सौप देते है, लिफ्टमेन बटन दबा कर सीधे नौवे माले पर आपको पहुचा देता है, यह लिफ्टमेन ही "सद्‌गुरु" होता है। कुछ अज्ञानी तो दुसरे या पांचवे माले पर ही उतर जाते है। अब इसे "लिफ्टमेन" क्या करे वह तो लीफ्ट नौवे माले तक लेकर जा ही रहा है। और आपको भी ले जाना चाहता है, लेकीन आपका ही समय नही आया है, तो वह लिफ्टमेन बेचारा क्या करे। यह "आठवा अनुष्ठान" एक महत्वपुर्ण पडाव है, यहाँ पर मै अपनी "गायो" का एक "ग्वाला" बन कर निरीक्षण कर रहा हु कितनी गाये आगे बराबर चल रही है, कितनी "आलस" कर के पिछे रह गयी है, मुझे इनके लिये "रुकना" ही होगा क्योकी सभी को साथ लेकर चलना मेरा स्वभाव है, मेरा निर्माण ही इसी कार्य के लिये हुआ है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

इन आठ अनुष्ठानो के माध्यम से एक उच्च शिखर तक आकर वापस आया हु और कई साधको को उस उच्च शिखर तक पहुचा कर आया हु। अब उच्चशिखर पर कौन साधक पहुचे वह आपको इस लीये नही मालुम क्योकी वह मालुम होता तो, आप भी उनके साथ उच्चशिखर पर ही होते। (अज.)

इसीलीये मै बार² कहते रहता हु, की सदैव स्वच्छ घाट पर ही नहाओ। सदैव अच्छे साधको की संगत मे रहो आठ साल का समय बीत गया ये आठसालो के आठ अनुष्ठान कब चालु हुये और कब समाप्त हुये इसका पता भी नही चला ये आठ साल आठ दिनो जैसे ही लग रहे हो मानो एक शिबीर ही सपना हो गया। मुझे बचपने कुश्ती खेलने का शौक था। और जो मेरे गुरुथे उन्होने कुश्ती के दांवपेंच सिखाने के बाद एक "गुरुमंत्र" दिया था, की कुश्ती सदैव अपने से अधीक ताकदवर के साथ ही खेलो तो ही तुम्हारी प्रगती होगी और उसे मैने कुश्ती मे, सदैव याद रखा अपनी शिक्षा मे, भी याद रखा और यही गुरुमंत्र आज तुम्हे भी दे रहा हु आपसे अच्छे साधको के साथ ही सदैव रहो इसीसे दो फायदे है। एक तो आपका अंहकार नही बढेगा की आप अच्छे साधक है। और आपकी

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| Whole World is a Family ||

आत्मा को सदैव एक अच्छी आत्मा की संगत मीलेगी। आप जब इतनी दुर गंगाघाट पर स्नान करने आये हो तो थोडा कष्ट ओर करो और अच्छे घाट का चुनाव कर के स्नान करो। और गंगाघाट पर स्नान करने को आये हो यह मुख्य उद्देश, मत भुलो। आपको कहता हु ऐसा नही है, यहाँ पर भी मेरी बैठके मुझसे भी श्रेष्ठ और बडे अनुभवी गुरुशक्तीयो के साथ प्रतिदीन यज्ञशाला के पास सदैव कीये गये के "वड के झाड" के निचे होती ही रहती है। कार्य पर उनकी राय जानते रहता हु अब क्या आदेश है, वह भी पुछते रहता हु। सब कुछ सुक्ष्मरुप मे होता है। जिस प्रकार से एक डॉ. अपना इलाज नही कर सकता वैसे ही मेरा आपसे लगाव है, मुझे आपकी गलतीया नही दिखती मुझे आप के दोष, नही दिखते इसी लीये आपका परिक्षण सदैव उन्हीके द्वारा करवाता और वह जो बताते वे ही बाते आपको संदेश के माध्यम से भेजता हु। आप की गलती यह हो रही है की आप यहाँ क्यो आये यह ही आप भुल गये है। केवल इस एक विषय पर ही कल बडी अच्छी चर्चा गुरुदेव के साथ हुयी है। अब अगले वर्ष क्या क्या करना है, सारी बाते बडी विस्तार के साथ जानने को मीली है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

दुसरा गुरुदेव का कहना है। "गुरुमंत्र" तो हिरा है. लेकीन
हिरा और कांच का टुकडा। इसमे भी जो अन्तर नकर सके
ऐसे साधको को वह "गुरुमंत्र" दिया है,
"गुरुमंत्र" तो "परमात्माने आत्मा" को दिया हुआ आर्शिवाद है।
लेकीन उसे ग्रहण करने वाला एक पवीत्र आत्मा होना।
एक शुद्ध आत्मा होना आवश्यक है। तभी वह "मंत्र" सार्थक
हो पायेगा।
"गुरुमंत्र" ८०० साल पुराना है, इन ८०० सालो के इतीहास
मे गुरुमंत्र देने वाले माध्यम और लेने वाले माध्यम सदैव
बदलते रहे लेकीन "गुरुमंत्र वही रहा और उसका प्रभाव
भी वही रहा। "गुरुमंत्र" एक ही है, ॥श्री शिवकृपानंद स्वामी
नमो नमः॥ और बोलने का तरीका भी वही ८०० साल
पुराना है, और ८०० सालो की ऋषी मुनीयो की
पवीत्र सामुहीकता उसके साथ जुडी है, और ८०० सालो
कही इसे लीखा नही गया था। इसे किसीने कीसीको
दिया नही, किसीने कीसीसे लिया, नही सदगुरु
का यह ज्ञान जैसे ही शिष्य तैयार हो जाता था -
यह ज्ञान सहजता से ही गुरु से शिष्य को
प्राप्त हो जाता था। इतीहास मे सदैव सदगुरु
को शिष्य समर्पीत हो जाने के बाद यह "गुरुमंत्र"

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

शिष्य को प्राप्त हुआ है, लेकीन समाज मे ऐसा नही हुआ पहले गुरुमंत्र मिला और बाद मे शिष्य का समर्पण हुआ इसी कारण ग्रहण करने वाले इस मंत्र के महत्व को नही समझ पाये है।

गुरुदेव की सलाह थी की प्रथम साधक को एक पवीत्र आत्मा स्तर तक शुद्ध किया जाये और बाद मे ही "गुरुमंत्र" दिया जाये इसी लीये यह बदलाव भी किया है, की "गुरुमंत्र" ग्रहण करने के पुर्व साधक का आत्मभाव वृद्धीगत हो जाये।

अन्यथा मैने गुरुमंत्र प्राप्त किया "मै" एक अच्छा साधक बन गया। याने "मै" का अंहकार साधक का चोला पहन लेगा, सदैव "मै" का अंहकार रुप बदलते रहता है। और सभी स्थीतीयो मे अपने आप को बचा कर ही रखता है, इसे समाप्त करना बडी कठीन बात है. इसे तो सामुहीकता के समुद्र मे विसर्जीत ही करना होगा। आप सभी अपने "मै" के अंहकार को विसर्जीत कर पाये यही प्रभु से प्रार्थना है। आप सभी को खुब खुब आर्शीवाद

आपका
बाबास्वामी